Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02 No.01 August 2023
http://www.knowledgeableresearch.com/

****

मूल्य आधारित पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

[1] अखिलेश तिवारी एवं [2] डॉ० प्रियंका शर्मा
[1] शोधार्थी, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा- उत्तर प्रदेश
[2] शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा- उत्तर प्रदेश
ईमेल:**akhileshtiwarispn25@gmail.com**

****

सारांश:- पर्यावरण की पारिस्थितिकी और बुनियादी बातों के सिद्धांत वास्तव में पृथ्वी-नागरिकता की भावना और पृथ्वी और उसके संसाधनों की देखभाल के लिए कर्तव्य की भावना पैदा करने और उन्हें स्थायी रूप से प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं। समाज के सभी वर्गों को औपचारिक और अनौपचारिक तरीकों से पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। जब पर्यावरण के संरक्षण और संरक्षण की बात आती है तो सभी को इसे समझने की आवश्यकता है क्योंकि 'पर्यावरण सभी का है' और 'प्रत्येक व्यक्ति का मामला' है। आज हमारा देश पर्यावरणीय समस्याओं से अस्त हैं जो पिछले कुछ दशकों में अधिक बढ़ी हैं। पर्यावरण के प्रति अनदेखी व गैर संवेदनशील दृष्टिकोण प्राकृतिक तबाही पैदा कर सकती है जिससे होने वाली क्षति की भरपाई शायद कभी न हो सके।

मुख्य शब्द- मूल्य, पर्यावरण शिक्षा।

पृष्ठभूमि:-

पर्यावरण शिक्षा या पर्यावरण साक्षरता एक ऐसी चीज है जिससे हर व्यक्ति को अच्छी तरह से वाकिफ होना चाहिए।

पर्यावरण की पारिस्थितिकी और बुनियादी बातों के सिद्धांत वास्तव में पृथ्वी-नागरिकता की भावना और पृथ्वी और उसके संसाधनों की देखभाल के लिए कर्तव्य की भावना पैदा करने और उन्हें स्थायी रूप से प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं। ताकि हमारे बच्चों और भाव्य बच्चों को एक सुरक्षित विरासत मिल सके और स्वच्छ ग्रह पर रहने के लिए अनुकूल वातावरण मिल सके।

मानवीय मूल्य: पर्यावरण शिक्षा के बारे में पाठ्यपुस्तकों और संसाधन सामग्रियों की तैयारी पर्यावरण के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। 'मानव के लिए प्रकृति' के बजाय मूल मानव मूल्य 'प्रकृति में मनुष्य' को उसी के माध्यम से संक्रमित करने की आवश्यकता है।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

सामाजिक मूल्य:

प्रेम, करुणा, सहिष्णुता और न्याय जो हमारे अधिकांश धर्मों की बुनियादी शिक्षाएं हैं, उन्हें पर्यावरण शिक्षा में बुना जाना चाहिए। ये पोषित होने वाले मूल्य हैं ताकि सभी प्रकार के जीवन और इस पृथ्वी पर जैव विविधता की रक्षा हो।

सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य:

ये वेद में निहित मूल्य हैं जैसे **"देही मुझे दादामी ते"** अर्थात "तुम मुझे दो और मैं तुम्हें देता हूं" (यजुर्वेद) इस बात पर जोर देते हैं कि मनुष्य को उसका पोषण किए बिना प्रकृति का शोषण नहीं करना चाहिए। हमारे सांस्कृतिक रीति-रिवाज और अनुष्ठान कई मायनों में हमें ऐसे कार्य करने के लिए सिखाते हैं, जो प्रकृति की रक्षा और पोषण करते हैं और प्रकृति के हर पहलू का सम्मान करते हैं, उन्हें पवित्र मानते हैं, चाहे वह नदियां हों, धरती हो, पहाड़ हों या जंगल हों।

नैतिक मूल्य:

पर्यावरण शिक्षा को मानव-केंद्रित विश्व-दृष्टिकोण के बजाय पृथ्वी-केंद्रित के नैतिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए। शैक्षिक प्रणाली को पृथ्वी-नागरिकता की सोच को बढ़ावा देना चाहिए। मानव को सर्वोच्च मानने के बजाय हमें पृथ्वी के कल्याण के बारे में सोचना होगा।

वैश्विक मूल्य:

यह अवधारणा कि मानव सभ्यता संपूर्ण और इसी तरह प्रकृति के रूप में ग्रह का एक हिस्सा है और पृथ्वी पर विभिन्न प्राकृतिक घटनाएं परस्पर जुड़ी हुई हैं और सद्भाव के विशेष बंधनों से जुड़ी हुई हैं। अगर हम कहीं भी इस सामंजस्य को बिगाड़ते हैं तो एक पारिस्थितिक असंतुलन होगा जिससे भयावह परिणाम सामने आएंगे।

आध्यात्मिक मूल्य:

आत्म-संयम, आत्म-अनुशासन, संतोष, इच्छाओं में कमी, लालच और तपस्या से मुक्ति के सिद्धांत हमारे देश के पारंपरिक और धार्मिक ताने-बाने में फैले कुछ बेहतरीन तत्व हैं। ये सभी मूल्य संरक्षणवाद को बढ़ावा देते हैं और हमारे उपभोक्तावादी दृष्टिकोण को बदल देते हैं।

पर्यावरण शिक्षा में शामिल उपर्युक्त मानवीय मूल्य, सामाजिक-सांस्कृतिक, नैतिक, आध्यात्मिक और वैश्विक मूल्य स्थायी विकास और पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक लंबा रास्ता तय कर सकते हैं। मूल्य-आधारित

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

पर्यावरणीय शिक्षा हमारे मन-सेट, हमारे दृष्टिकोण और हमारी जीवनशैली के कुल परिवर्तन में ला सकती है। पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने के लिए दृष्टिकोण।

समाज के सभी वर्गों को औपचारिक और अनौपचारिक तरीकों से पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। जब पर्यावरण के संरक्षण और संरक्षण की बात आती है तो सभी को इसे समझने की आवश्यकता है क्योंकि 'पर्यावरण सभी का है' और 'प्रत्येक व्यक्ति का मामला' है। विभिन्न चरण और तरीके जो समाज के विभिन्न वर्गों में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के लिए उपयोगी हो सकते हैं, इस प्रकार हैं:

i) **औपचारिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों के बीच:** बचपन की अवस्था से ही छात्रों को पर्यावरण शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। यह एक स्वागत योग्य कदम है कि अब पूरे देश में हम सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों का पालन करते हुए स्कूल और कॉलेज स्तर सहित सभी चरणों में एक विषय के रूप में पर्यावरण अध्ययन शुरू कर रहे हैं।
ii) जन-माध्यमों के माध्यम से जनता के बीच: लेख, पर्यावरण रैली, वृक्षारोपण अभियान, नुक्कड़ नाटक, वास्तविक पर्यावरण-आपदा की कहानियों और संरक्षण प्रयासों की सफलता की कहानियों के माध्यम से मीडिया पर्यावरण के मुद्दों पर जनता को शिक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
iii) योजनाकारों, निर्णयकर्ताओं और नेताओं के बीच: चूंकि समाज का यह विशिष्ट वर्ग समाज के भविष्य को बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए विशेष रूप से आयोजित कार्यशालाओं के माध्यम से उन्हें आवश्यक अभिविन्यास और प्रशिक्षण देना बहुत महत्वपूर्ण है प्रशिक्षण कार्यक्रम। पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित पर्चे या पुस्तिकाओं के रूप में पर्यावरण से संबंधित संसाधन सामग्री का प्रकाशन भी इस खंड को क्षेत्र के नवीनतम विकास के बीच रखने में मदद कर सकता है।

वर्तमान पर्यावरणीय मुद्दे एवं मानवीय मूल्यों पर प्रभाव-

130 करोड़ से अधिक आबादी के साथ भारत वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक आबादी वाले देश चीन से आगे निकलने को तैयार है जबकि पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संरक्षण में अभी पीछे है। आज हमारा देश पर्यावरणीय समस्याओं से अस्त हैं जो पिछले कुछ दशकों में अधिक बढ़ी हैं। पर्यावरण के प्रति अनदेखी व गैर संवेदनशील दृष्टिकोण प्राकृतिक तबाही पैदा कर सकती है जिससे होने वाली क्षति की भरपाई शायद कभी न हो सके।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

पर्यावरण के प्रति हमारे दृष्टिकोण, मूल्य तथा गैर संवेदनशीलता आज हमारे समक्ष पर्यावरणीय मुद्दों के रूप में उपस्थित है –

1. **वायु प्रदूषण एवं प्रभाव-** वायु प्रदूषण भारत को प्रभावित करने वाली सर्वाधिक बुरी विपत्तियों में से एक है। अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेन्सी IEA की रिपोर्ट के अनुसार 2040 तक देश में वायु प्रदूषण के कारण 9 लाख मौत व व्यक्ति के औसत जीवन में लगभग 15 महीने कमी हो सकती है। 2016 के पर्यावरण सूचकांक की रैंकिंग में भारत 180 देशों में 141वें स्थान पर है। यह दिखाता है कि हमारे मूल्य आज इतने कमजोर हो रहे हैं, कारण पर्यावरण के प्रति हमारी संवेदनशीलता का कमजोर होना। वायु प्रदूषण आज हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है जिससे हमारी सोच भी विकृत होती जा रही है जो सीधे-सीधे हमारे मूल्यों को प्रभावित करता है।
2. **भू-जल स्तर पर प्रभाव-** भू-जल का पर्यावरण सन्तुलन व जीवन के लिये अत्यधिक महत्व है। जब से जीव व वन की सुरक्षा व समृद्धि होती है। यही भावना हमारे जीवन मूल्यों को मजबूत करती है। किन्तु आज भू-जल का अपने लाभ के लिये अत्यधिक दोहन ने स्पष्ट कर दिया है कि व्यक्ति स्वार्थ के आगे कुछ नहीं देखता और भू-जल का अत्यधिक दोहन करता जा रहा है। उसकी यह भावना हमारे मूल्यों को कमजोर कर रही है।
3. **जलवायु परिवर्तन एवं प्रभाव-** आज हम स्पष्ट रूप से महसूस कर रहे हैं कि जलवायु अपने निर्धारित चक्र से भिन्न रूप में प्रकट हो रही है। गर्मी के समय अत्यधिक गर्मी, वर्षा का अनियमित होना, शीत ऋतु भी जलवायु परिवर्तन से प्रभावित है। इसका मुख्य कारण प्रकृति का अत्यधिक दोहन व ग्लोबल वार्मिंग इन दोनों का हमारे जीवन तथा जीवन मूल्यों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। हिमालय के ग्लेशियरों के अत्यधिक पिघलने के कारण बाढ़ जैसी प्राकृतिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन यह दिखाता है कि हम अपने राष्ट्रीय वैश्विक मूल्यों के प्रति कितना संवेदनहीन हैं।
4. प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग एवं प्रभाव- प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग देश के लिये एक बड़ी चिन्ता का विषय है। 2010 में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक का वार्षिक उपयोग 8 किलोग्राम है। यह 2020 तक 27 किलोग्राम हो जाएगा। इसका अत्यधिक उपयोग हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त पशुओं तथा भू-उर्वरा को अत्यधिक नुकसान पहुंचाता है किन्तु व्यक्ति सुविधा के लिये इसके नियंत्रित उपयोग करने को तैयार नहीं होते। यह हमारे संस्कार तथा व्यवहार पर सीधा असर दृष्टिगत कराता है कि हम मूल्यों की अपेक्षा अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को अधिक महत्व देते हैं।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

5. **कचरा निपटान और स्वच्छता एवं प्रभाव-** 2014 में जारी द इकोनॉमिस्ट की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 130 मिलियन परिवारों के पास शौचालय नहीं हैं। 72% से अधिक आबादी खुले में शौच करती है। इसके अतिरिक्त कचरा निष्पादन का सुरक्षित तरीका न होना व स्वच्छता में भारी कमी हमारी संस्कृति, व्यवहार व मूल्यों को प्रभावित करता है। अस्वच्छतापूर्ण वातावरण में व्यक्ति की मानसिकता स्वच्छ नहीं होती जो हमारे मूल्यों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है।
6. **जैव विविधता एवं प्रभाव-** अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ द्वारा भारत में पौधों और जानवरों की 47 प्रजातियों को गम्भीर लुप्तप्राय प्रजातियों में सूचीबद्ध किया है। पारिस्थितिकी और प्राकृतिक निवास की क्षति ने कई स्वदेशी प्रजातियों को खतरे में डाल दिया है। इनमें साइबेरियन सारस, हिमालय के भेड़िये और कश्मीरी हिरण ये सभी विलुप्त होने की कगार पर हैं। भारत में तीव्र शहरीकरण, शिकार और चमड़े के लिये अंधाधुंध शिकार आदि इन जानवरों को गम्भीर रूप से लुप्तप्राय और जड़ी-बूटियों को विलुप्त की कगार पर पहुँचाने के लिये जिम्मेदार हैं। सामान्यतौर पर औषधीय गुणों वाले पौधों को आयुर्वेदिक उपचार के लिये काट लिया जाता है किन्तु इनके संरक्षण एवं उत्पादन पर कोई ध्यान नहीं देना जैव विविधता को नुकसान पहुँचा रही है।

पर्यावरणीय मुद्दे मानव जीवन व जीवन मूल्यों को प्रभावित करते हैं। जैव भौतिक सीमाओं में जलवायु का नियंत्रण सबसे महत्वपूर्ण है। जैवकीय दृष्टि से मानव शरीर सभी जलवायु दशाओं में कार्य करने में सक्षम नहीं होता बल्कि कुछ निश्चित पर्यावरणीय दशाओं में ही यह सुचारु रूप से क्रियाशील हो सकता है। जैसे अत्यधिक ऊँचाई पर ऑक्सीजन की कमी के कारण मनुष्य का जीवन संकट में आ जाता है। इसी प्रकार अत्यधिक ऊष्मा और आर्द्रता मनुष्य के शारीरिक और मानसिक वृद्धि में बाधक होते हैं। जलवायु दशाएँ अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य व मानवीय मूल्यों पर प्रभाव डालती हैं।

भौतिक पर्यावरण मानव जीवन के अन्य क्षेत्रों पर भी प्रभाव डालता है। अनगिनत शोधों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भौतिक पर्यावरण मानव के विचारों, चिन्तन, विचारधाराओं तथा संस्कृति एवं व्यवहारों को प्रभावित करता है। उदाहरणस्वरूप बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में मनुष्य में यह धारणा होती है कि नदियाँ सदा विनाश की स्रोत होती हैं। ठीक इसके विपरीत जल संकट क्षेत्रों में नदियाँ जीवनदायिनी समझी जाती हैं।

संक्षेप में यह उल्लेखित किया जा सकता है कि औद्योगिक क्रान्ति के बाद मानव व पर्यावरण सम्बन्ध में गुणात्मक परिवर्तन हुआ है। पर्यावरण दोहन अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। प्राकृतिक पर्यावरण की अंतःनिर्मित स्वयं नियामक

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

प्रक्रिया जोकि पर्यावरण की बाहरी परिवर्तनों को आत्मसात् करने की क्षमता होती हैं, काफी दुर्बल हो गयी है। इस काल में पर्यावरण विदोहन के कारणों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि, नगरीकरण, औद्योगीकरण, तकनीकी विकास, भौतिकवाद आदि प्रमुख हैं। पर्यावरण अवनयन के दुष्परिणामों में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, भूमण्डलीय ताप में वृद्धि, चरम घटनाएँ, प्राकृतिक प्रकोप तथा विनाश जैसे भूकम्प, बाढ़ तथा सूखा, चक्रवात आदि उल्लेखनीय हैं। मनुष्य अब पर्यावरण अवनयन का मूल्य चुका रहा है।

संदर्भ

1- चौधरी के.के., "इक्कीसवीं शताब्दी में मूल्य शिक्षा", भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. 2000।
2- गुप्ता, एन.एल., "मूल्य परक शिक्षा और समाज" नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2000।
3- पाण्डेय, आर.एस. एवं मिश्र, के.एस., "मूल्य शिक्षण", विनोद पुस्तक मन्दिर, 1997-98।
4- शुक्ला, सी०एस०, 'पर्यावरण शिक्षा', लखनऊः आलोक प्रकाशन अमीनाबाद, 2016।
5- शर्मा, आर०ए०, 'पर्यावरण शिक्षा', मेरठः आर० लाल बुक डिपो, 2013।
6- गोयल, एम०के०, 'पर्यावरण शिक्षा', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, 2009।
7- www.wikipedia.com
8- https://www.drishtiias.com/

Received Date:12.09.2023
Publication Date: 30.09.2023